



जरा सोचें...

वास्तव में साधना- अपने ऑरिजनल स्वरूप में स्थित रहना है...

वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका राजयोगिनी
ब्र.कु. गीता दीदी, माउण्ट आबू

मधुबन में हम नैचुरल योगी बन सकते हैं। बाबा की तपोभूमि, कर्मभूमि तो बाबा की याद सहज आती है। एक मैपन और मेरापन चाहिए वो कौन-सा मैपन और मेरापन? मैं आत्मा और मेरा बाबा। ये मैपन तो डेवलप करना है, लेकिन अच्छी रीति धारण करना है। क्योंकि जितना ज्यादा बाबा से अच्छी तरह से जुड़ेंगे उतना ऑटोमेटिक और सबसे डिटेच होते जायेंगे। यहाँ से इस दुनिया से देह सम्बन्धों से डिटेच होना है। और जितना बाबा से जिगरी सच्चा प्यार उतना बाबा से योग

देह अभिमान का मैपन और मेरापन समाप्त करना है, क्योंकि प्रैक्टिकल रोल में, जीवन में सबसे ज्यादा यूज होने वाला शब्द कौन-सा है- मैपन और मेरापन। जब देह समझते थे तो वो देह अभिमान वाला मैपन और मेरापन आया।

अब एक भी मुरली ऐसी नहीं होगी। जिसमें अनेक बार अपने को आत्मा समझने के लिए बाबा ने ना कहा हो। रोज बार-बार बाबा कहते हैं, हम समझते हैं कि ये कॉमन प्वाइंट है। मुरली में और कोई प्वाइंट याद नहीं होगी

बैठकर खुद की रियलिटी खुद को रियलाइज करानी है। ताकि ये पक्का हो जाये कि मेरी ऑरिजनलिटी पवित्रता है, शांति है, आनंद है, और विशेष अभ्यास करने से फिर वो अवेयरनेस बन जाती है।

एक नैचुरल जागृति हमारी रहती है कि मेरी अपनी वास्तविकता क्या है। तो जो रॉन बातें बुद्धि में बैठी थी कि नहीं मेरी आदत ऐसी है, मेरा नेचर ऐसा है, वो निकल जायेगा। दुनिया में तो वो ही कहते हैं ना कि कुत्ते की पूंछ टेढ़ी की टेढ़ी रहती है। कुछ भी करो वो सीधी नहीं होती। ऐसे इंसान के संस्कार नहीं बदलते। ऐसा मानते हैं ना कि रस्सी जलेगी पर बल नहीं टूटेगा। तो नेचर के लिए वो ऐसे समझते हैं लेकिन नेचर का ज्ञान ही गलत है। कि इनकी नेचर ऐसी है। परन्तु बाबा ने हमें ये सनातन सत्य बताया कि भल वैरायटी रोलस हम प्ले करते हैं परन्तु हम सबके अन्दर एक कॉमन कोड है वो है हमारी ओरिजनल नेचर कि हरेक आत्मा ओरिजनली शुद्ध है, शांत है। तो जब भी मैं शब्द बोलते हैं मुख से न बोलें लेकिन मन में ये अवेयरनेस ज़रूर आये कि मैं आत्मा हूँ।

दादी रतनमोहिनी हमें बताती कि घंटों हम इसी नशे में बैठे रहते थे कि मैं शुद्ध आत्मा हूँ। शुरू में हमें बड़ा लगता था कि एक ही बात में घंटों कैसे बैठे रहते थे! तो जैसे-जैसे हम शुद्ध होते जाते हैं अब अनुभव होता है कि हमें अपने शुद्ध स्वरूप में कितना आनंद अनुभव होता है। भक्ति में आप देखो जिन सन्यासियों के जीवन को शुष्क माना जाता है उन सब सन्यासियों के नाम क्या हैं? शिवानंद, चिदानंद, निजानंद, स्वरूपानंद आनंद ही आनंद। फिर मंथन किया महसूस हुआ कि स्व स्थिति में आत्मा भान में कितना आनंद अनुभव होता है। और वो अपनी आंतरिक स्थिति का सुख और आनंद जब हम अनुभव करते हैं तो फिर हमें और अल्पकाल की प्राप्ति मान, शान, महिमा, उसकी इच्छा ही नहीं होगी ही नहीं। तो वास्तव में साधना तो ये ही है।

जब तक एक्शन ठीक नहीं करते हैं ना तो कहते हैं ना फिर से, फिर से तो आत्मभिमानी बनने का प्रथम पार्ट जब तक परफेक्ट हम नहीं पढ़ते हैं तब तक रोज याद करना और कराना जरूरी है। हमारी वास्तविकता ये है।

लगेगा। बाबा ने एक बार पीस ऑफ माइंड के जो गैस्ट आये थे विदेश से उनको यही मैसेज दिया था कि 'गॉड फादर' कहते हो परन्तु 'गॉड इज माई फादर' कहो। जहाँ अपनापन है वहाँ याद सहज है। याद का आधार प्यार। जितना बाबा से जिगरी प्यार, अपनापन, मेरापन अनुभव है सबको, अपने के लिए, 'मेरे' के लिए सबकुछ कुर्बान करते हैं। जिस मेरे में दुनियावी रीति से, देहिक रीति से, भौतिक रीति से कुर्बान होते हैं उसमें कोई प्राप्ति ही नहीं थी, लेकिन फिर कितने कुर्बान जाते हो, प्रवृत्ति मार्ग में तो अनुभव है ना! बच्चों के लिए, पति के लिए, परिवार के लिए, अपने लिए भी इतना नहीं सोचते। खुद न खायेंगे-पीयेंगे, मौज मनायेंगे, बच्चों के लिए, परिवार के लिए इतना मेरापन बाबा के लिए क्यों नहीं आता है? अपने आप में देखना है, पृष्ठना है अपने आप से। जैसे-जैसे पुरुषार्थ करते जाते हैं और अवस्था बनती जाती है फिर वो प्यार बाबा के लिए बढ़ता जाता है, अनुभव होता जाता है।

तो ये तो कह ही देंगे कि आज बाबा ने कहा कि अपने को आत्मा समझकर बाबा को याद करो। क्योंकि हमें पता ही है कि ये बात तो बाबा ने कही ही है। परन्तु ये मोस्ट इम्पोर्टेंट प्वाइंट है इसीलिए बाबा बार-बार कहते हैं। जब तक नैचुरल आत्म अभिमानी न बनें तब तक बाबा कहते रहते हैं। जब तक एक्शन ठीक नहीं करते हैं ना तो कहते हैं ना फिर से, फिर से तो आत्मभिमानी बनने का प्रथम पार्ट जब तक परफेक्ट हम नहीं पढ़ते हैं तब तक रोज याद करना और कराना जरूरी है। हमारी वास्तविकता ये है। हम आत्मा हैं, और वो भी कौन-सी आत्मा? शुद्ध आत्मा, सत्य आत्मा, शांत आत्मा, ये हमारी रियलिटी है। नैचुरल आत्म भान होना चाहिए पर द्वापर कलियुग में जो रोल प्ले किया देह भान का तो देह भान नैचुरल हो गया। इसलिए हम विशेष अभ्यास करते हैं। कईयों को होता है कि योग में क्या करना है बस वही रिपीट करते रहना है। बाबा शांति का सागर, मैं शांत स्वरूप। रिपीट नहीं करना है। साइलेंस में



रायपुर-छ.ग। छत्तीसगढ़ की निवर्तमान राज्यपाल अनुसूईया उइके को मणिपुर का राज्यपाल बनाए जाने पर उन्हें शॉल पहनाकर व प्रसाद देकर बधाई देने के पश्चात् उनके साथ हैं स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सविता बहन, ब्र.कु. वनिषा बहन एवं ब्र.कु. हीरेन्द्र भाई।



संधवा-म.प्र। ब्र.कु. छाया बहन को 'शक्ति सम्मान 2023' से सम्मानित करते हुए लायंस क्लब की डिस्ट्रिक्ट गवर्नर साधना सोडानी एवं लायंस क्लब, संधवा के अध्यक्ष श्याम तायल।



वांगल-तेलंगाना। होली महोत्सव पर मेयर श्रीमति गुंडू सुधा रानी गरु को शुभकामनाएं देने एवं ब्रह्मकुमारीज सेवाकेन्द्र में आमंत्रित करने के पश्चात् उनके साथ हैं ब्र.कु. सरिता बहन, ब्र.कु. चरिथा बहन, ब्र.कु. सुधाकर भाई एवं हरिनाथ भाई।



रतलाम-पत्रकार कॉलोनी(म.प्र.)। सर्किल जेल में सभी कैदी भाइयों के लिए आयोजित दस दिवसीय राजयोग मेडिटेशन कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए जेल अधीक्षक लक्ष्मण भदौरिया, उप जेल अधीक्षक ब्रजेश मकवाना, समाजसेवी राजेन्द्र पोरवाल, ब्र.कु. अनीता बहन तथा अन्य।



नवसारी-लुनसिकुई(गुज.)। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के कार्यक्रम के साथ संस्थान की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी एवं दादी चंद्रमणि के पुण्य स्मृति दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए डॉ. अमिता पटेल, ब्र.कु. गीता दीदी, ब्र.कु. भानु बहन तथा अन्य।



पुणे-पिंपरी(महा.)। पिंपरी फेस्टिवल 2023 कार्यक्रम में ब्रह्मकुमारीज की स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सुरेखा बहन को महापौर संजोग वाधेरे, उपमहापौर प्रभाकर वाधेरे, नगरसचिका उषाताई काळे, शितलताई काटे, उषाताई वाधेरे, उद्योजक समाजसेवक ऋषिकेश वाधेरे एवं शहर के अन्य गणमान्य लोगों एवं समाजसेवकों द्वारा 'आदर्श महिला गौरव पुरस्कार' प्रदान कर सम्मानित किया गया।



बीदर-रामपूर कॉलोनी(कर्नाटक)। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित 'हैप्पी वुमेन हैप्पी फैमिली' कार्यक्रम में पीएसआई सविता बहन, एडवोकेट मंगला दादगी, वाली श्री हॉस्पिटल की संचालिका अंजना वाली, दत्ता गिरी महाराज पब्लिक स्कूल की प्रिंसिपल जय देवी यदलापुरे, ब्र.कु. पार्वती बहन, ब्र.कु. ममता बहन सहित अन्य भाई-बहनें शामिल रहे।



विदिशा-म.प्र। महाशिवरात्रि के कार्यक्रम में शिव ध्वजारोहण के पश्चात् समूह चित्र में अदानी कंपनी के मैनेजर विनय सक्सेना, ब्र.कु. रेखा बहन, ब्र.कु. रुकमणी बहन, ब्र.कु. नंदिनी बहन तथा अन्य।